Ñfr % fo'kn Jh vkfnukFk iapdY;k.kd fo/kku
Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxj th egkjkt
laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ % 1000
ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxj th egkjkt
lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folksellkxj th egkjkt
laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh
la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh
lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155
izkfIr LFky % 1- tSu ljkso j lfefr] fuEZy dqekj xksèkk]
2142] fuEZy fudat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu % 0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008
2 Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cq/k fogkj] vyoj] eks- % 9414016566
3 fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ dkyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
4 fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971
eqY; % 25@& #- ek=k

eqnzd % ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- % 09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

भगवान ऋषभदेव के पंचकल्याणक

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में तृतीय काल में जब पल्य का आठवां भाग शेष रह गया था तब प्रतिश्रुति आदि चौदह कुलकरों की उत्पत्ति हुई, (प्रसेनजित से) अन्तिम चौदहवें कुलकर नाभिराय नामक पुत्र उत्पन्न हुए जिनका विवाह इन्द्र ने मरुदेवी कन्या के साथ कराया था।

भोगभूमि में मरुदेवी और नाभिराय से अलंकृत पवित्र स्थान में जब कल्पवृक्षों का अभाव हो गया तब वहां उनके पुण्य के द्वारा बुलाये हुए इन्द्र ने एक नगरी की रचना की। इन्द्र की आज्ञा से शीघ्र ही अनेक उत्साही देवों ने बड़े आनन्द के साथ स्वर्गपुरी के समान उस नगरी की रचना कर दी। उसका नाम अयोध्या था। उस नगरी के मध्य में इन्द्रपुरी के समान सुन्दर राजमहल बनाया। उस समय जो मनुष्य जहां-तहां बिखरे हुए रह रहे थे देवों ने उन सब को लाकर उस नगरी में बसाया और सबकी सुविधा के लिए अनेक प्रकार के उपयोगी स्थानों की रचना कर दी। वह नगरी परकोटा, चार मुख्य द्वार और खाई आदि से सुरक्षित थी।

श्री ऋषभदेव का स्वर्गावतरण :–

छः माह बाद भगवान ऋषभदेव 'सर्वार्थसिद्धि' विमान से अवतरित होकर यहां माता मरुदेवी के गर्भ में आने वाले हैं' ऐसा जानकर सौधर्म इन्द्र ने कुबेर से कहा–

'हे धनपते! तुम अयोध्या नगरी में माता मरुदेवी के आंगन में रत्नों की वर्षा करना शुरू कर दो।'

उसी दिन से इन्द्र की आज्ञा से प्रेरित हुआ कुबेर प्रतिदिन माता के आंगन में उत्तम-उत्तम पंचवर्णी रत्नों को और सुवर्ण को बरसाने लगा। उन रत्नों और सुवर्णों की वर्षा से ही उस समय वह पृथ्वी

'हिरण्यगर्भा' 'रत्न गर्भाः' इन नामों को धारण करने वाली हो गयी थी।

श्री ऋषभदेव का जन्म

नव महीने पूर्ण हो जाने पर चैत्र कृष्णा नवमी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में सूर्योदय के समय ब्रह्म नामक महायोग में माता मरुदेवी ने मति, श्रुत, अवधि इन तीनों ज्ञानों से सहित ऐसे पुत्र रत्न को जन्म दिया। उस समय देवों के यहां बिना बजाये बाजे बजने लग गये। इन्द्रों के सिंहासन कंपायमान हो उठे, उनके मुकुट अपने आप झुक गये और कल्पवृक्षों से पुष्प बरसने लगे तब इन्द्र ने अपने अवधिज्ञान से तीर्थंकर बालक के जन्म का समाचार जान अपने आसन से उतरकर सात पैंड आगे बराबर पृथ्वी पर मस्तक टेककर नमस्कार किया पुनः हर्ष से गद्गद् हो देवों को परिवार सहित अयोध या नगरी चलने की आज्ञा दी।

पुनः सौधर्म इन्द्र अपनी शची इन्द्राणी के साथ ऐरावत हाथी पर चढ़कर सभी इन्द्रगण और असंख्य देव-देवियों के साथ अध र्निमिष मात्र में अयोध्या नगर में गये। अयोध्या नगरी की तीन प्रदक्षिणा देकर इन्द्र को आज्ञा से इन्द्राणी गुप्त रूप से माता के महल से प्रवेश कर जिन बालक सहित माता की तीन प्रदक्षिणा देकर माता को मायामयी निद्रा में सुलाकर पास में मायामयी बालक को लिटाकर जिन बालक को गोद में ले जाकर अपने पति को सौंपती है। उस समय शची इन्द्राणी को बालक को देखकर इतना आनन्द हुआ था कि उसने अपने स्त्रीलिंग का ही छेद कर लिया।

महामहोत्सव के साथ इन्द्र ने सुमेरु पर्वत की तीन प्रदक्षिणा देकर जिन बालक को पांडुकवन की ईशान दिशा में स्थित पांडुक शिला पर विराजमान कर क्षीरोदधि से लाये हुए जल से 1008 कलशों

द्वारा अभिषेक किया पुनः शची ने बालक को वस्त्राभूषण से अलंकृत कर उनकी पूजा करके महामहोत्सव मनाया। तभी इन्द्र ने तांडव नृत्य कर खूब उत्सव मनाया और बालक का नाम ऋषभदेव रख दिया। पुनः वापस अयोध्या आकर माता के आंगन में सिंहासन पर जिनबालक को विराजमान कर ताण्डव नृत्य द्वारा महामहोत्सव मनाकर माता-पिता की स्तुति कर तीर्थंकर बालक को माता को सौंप दिया और बालक के अंगूठे (दाहिने) में अमृत स्थापित कर दिया। अनेक देवियों को बालक की सेवार्थ वहीं छोड़ इन्द्र वापस चले गये। भगवान का चिह्न ऋषभ अर्थात् बैल था।

भगवान का वैराग्य एवं दीक्षा

एक समय इन्द्र ने भगवान की राज्यसभा में बहुत से देवों के साथ नीलांजना अप्सरा ने नृत्य की व्यवस्था बनाई थी। अकस्मात् उसकी आयु समाप्त होते ही वहाँ दूसरी अप्सरा से नृत्य करना प्रारम्भ कर दिया। साधारण प्रजा इस अन्तर को न समझ पाई किन्तु मति, श्रुत, अवधिज्ञानी भगवान इस भेद को जान तत्क्षण राज्य वैभव से विरक्त हो गये। तभी पांचवें ब्रह्म स्वर्ग से लौकांतिक देवों ने आकर उनके वैराग्य की प्रशंसा की। उसी समय इन्द्र आदि देव आ गये।

भगवान को केवलज्ञान

इस प्रकार दिगम्बर वेष में उत्कृष्ट चर्या को पालन करते हुए एक हजार वर्ष के बाद भगवान ने ध्यान के द्वारा घातिया कर्मों को नष्ट करके पुरिमतालपुर के उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृ. ग्यारस को केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। तत्क्षण ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने आकाश में अधर समवसरण की रचना कर दी। उसी समय पुरिमतालपुर के राजा वृषभसेन जो कि भगवान के तृतीय पुत्र थे वे प्रभु के दर्शन करके दिगम्बर मुनि बन गये और तत्क्षण ही

मन:पर्ययज्ञान व अनेक ऋद्धियों को प्राप्त कर भगवान के प्रथम गणधर हो गये। भगवान की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दर भी निसर्गत:विरक्त हो प्रभु के समवसरण में आर्यिका बन गयीं।

भगवान के समवसरण में वृषभसेन आदि चौरासी गणधर, चौरासी हजार दिगम्बर मुनि, गणिनी आर्यिका ब्राह्मी तथा तीन लाख पचास हजार आर्यिकाएं थीं। इसके साथ ही तीन लाख श्रावक, पांच लाख श्राविकाएं, असंख्यात देव-देवियों और अगणित तिर्यंच थे।

भगवान का निर्वाण गमन

जब तृतीय काल में तीन वर्ष साढ़े-आठ माह शेष रह गए थे तभी भगवान कैलाश पर्वत से मोक्ष गये तब इन्द्रों ने आकर तीर्थंकर कुण्ड चौकोन कुण्ड में अग्नि स्थापित कर विधिवत् हवन विधि करके निर्वाण महोत्सव मनाया वह तिथि माघ कृष्ण चौदस थी जब भगवान मुक्त हो लोक के अग्रभाग पर जाकर विराजमान हो गये। इस हुण्डावसर्पिणी के दोष से भगवान ऋषभदेव तृतीय काल के अन्त में ही मोक्ष चले गये। अनन्तज्ञान, अनन्तसुख आदि अनन्त गुणों के स्वामी हो गये हैं और वहीं सिद्ध शिला पर वे अनन्तानन्त काल तक रहेंगे।

इस प्रकार यहां तीर्थंकर आदिनाथ प्रभु के पंचकल्याणक का वर्णन पूर्ण हुआ। परम पूज्य **आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने अपने उपयोग को प्रभु भक्ति में लगाते हुए अपने अन्तश: के भावों को इस **श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान** के द्वारा संजोया है। श्री आदिनाथ भगवान के पंचकल्याणक की तिथियों में या विशेष अवसर पर यह विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करे।

आचार्य श्री के पावन चरणों में नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु.....

संकलन-मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।

एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान स्तवन

दोहा– मंगलमय अर्हन्त जिन, मंगल सिद्ध महान।
आचार्योपाध्याय साधु हैं, मंगलमय गुणखान॥

(चौबोला छन्द)

तीन लोक के ज्ञाता जिनवर, वीतराग पद धारी हैं।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, निजानंद अविकारी हैं॥
आदि ब्रह्म आदीश आदि जिन, आदि सृष्टि के कर्त्ता।
नमन् करूँ अरहंत प्रभू को, मुक्ति वधू के जो भर्ता॥1॥

वृषभनाथ है नाम आपका, वृषभ चिन्ह के धारी हैं।
वृषभ धर्म को पाने वाले, आतम ब्रह्म विहारी हैं॥
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प कला के दाता हैं।
जगती को आलोकित करते, जग के भाग्य विधाता हैं॥2॥

कर्मभूमि के अधिनायक प्रभु, जग के करुणाकारी हैं।
जिनवाणी के अधीपति शुभ, तीर्थंकर अवतारी हैं॥
हे परम शांत! पावन पुनीत, हे कृपा सिंधु! करुणा निधान।
हे ऋषभदेव तव चरणों में, ममभाव सहित शत्-शत् प्रणाम्॥3॥

हे महिमा! मण्डित गुण निधान, हे अक्षय! जीवन ज्योतिधाम।
हे मोक्ष पथ! के उन्नायक प्रभु, जन जन के अमृत ललाम्॥
हे अजर अमर सृष्टी कर्त्ता! हे परम पिता! हे परम ईश!
हे आदि विधाता! युग दृष्टा, हे मुक्ति पथ पंथी मुनीश!॥4॥

तुम इन्द्रिय मन को जीत लिए, प्रभु जी जितेन्द्रिय कहलाए।
निज चेतन रस में लीन हुए, आतम स्वरूप को प्रभु ध्याए॥
हे जग उद्धारक! जगत पति, हे जिनवर! आदीश्वर स्वामी!।
सब बोल रहे हैं जयकारा, हे ऋषभदेव अंतर्यामी!॥5॥

॥पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
(समुच्चय पूजा)

स्थापना

तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी, प्राप्त किए हैं पञ्च कल्याण।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष शुभ, का हम करते हैं गुणगान॥
ऋषभ देव भगवान की महिमा, सारे जग में अपरम्पार।
विशद भाव से जो भी ध्याये, पा जाए वह भव से पार॥
भक्ति भाव से पूजा करते, करने को आतम उत्थान।
विनय सहित हम हृदय कमल में, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

जल पीकर काल अनादी से, हम तृषा शांत न कर पाए।
जो लगा हुआ है मिथ्या मल, हम आज यहाँ धोने आए॥
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस डाले चन्दन के वन कई, पर शीतलता न पाई है।
सम्यक् श्रद्धा की 'विशद' कली, न हमने हृदय खिलाई हैं॥

श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर कई थाल तन्दुलों के, हम चढ़ा चढ़ाकर हारे हैं।
अक्षय पद पाने हेतु नाथ, अब आए चरण सहारे हैं।।
श्री आदिनाथ के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

खाई तृष्णा की है असीम, हम उसे नहीं भर पाए हैं।
अटके हैं काम वासना में, छुटकारा पाने आए हैं।।
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को क्षुधा वेदना ने, सदियों से सदा सताया है।
मनमाने व्यंजन खाकर भी, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्यातम का, उसमें प्राणी भटकाए हैं।
अब मोह तिमिर हो नाश पूर्ण, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जीव सताए कर्मों से, गति-गति में दुःख उठाते हैं।
कर्मों की धूल उड़ाने को, अग्नी में धूप जलाते हैं।।
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना की चाह न शांत हुई, कई सरस श्रेष्ठ फल खाए हैं।
न मिला हमे शुभ शाश्वत् पद, फल हमने चरण चढ़ाए हैं।।
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सारा जग हमने घूमा, किन्तू अनर्घ पद न पाया।
हे नाथ! आज अब मेरा मन, वह पद पाने को ललचाया।।
श्री आदिनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कल्याणक पाँचों पाएँ हम, यह विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा दे रहे, हे करुणा के नाथ।
हमको भी अब ले चलो, मोक्षमहल में साथ।।
शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण कमल तव आज।
करुणाकर करुणा करो, तारण तरण जहाज।।
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– पञ्च कल्याण प्राप्त जिन, जग में हुए महान।
आदिनाथ जिन राज का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

पञ्च कल्याणक पाने वाले, तीर्थंकर हैं जगत प्रसिद्ध।
कर्मनाश कर अपने सारे, हो जाते हैं वे जिन सिद्ध॥
गर्भ कल्याणक में आने के, छह महीने पहले शुभकार।
देव रत्न वृष्टी करते हैं, जन्म नगर में मंगलकार॥1॥
अष्ट देवियाँ गर्भ का शोधन, करतीं आके भाव विभोर।
उत्सव होता है नगरी में, मंगलमय होता चारों ओर॥
सोलह स्वप्न देखती माता, जिनकी महिमा अपरम्पार।
जन्म समय पर इन्द्र चरण में, बोला करते जय-जयकार॥2॥
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, ऐरावत ले आता इन्द्र।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन करायें सौ-सौ इन्द्र॥
पद युवराज प्राप्त करके जिन, पाते हैं नर भव के भोग।
हो विरक्त दीक्षा पाते हैं, पा करके कोई इष्ट संयोग॥3॥
केश लुंच कर महाव्रती हो, करते हैं निज आतम ध्यान।
कर्म निर्जरा करते ज्ञानी, असंख्यात गुण जिन भगवान॥
कर्म घातियाँ के नाशी जिन, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग से आके इन्द्र महान॥4॥
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, भव्य जीव करते रसपान।
कोई दर्शन ज्ञान जगाकर, चारित पा करते कल्याण॥
अन्त समय में कर्म नाशकर, करते हैं प्रभु मोक्ष प्रयाण।
मोक्ष मार्ग दर्शायक जग में, आदिनाथ जी हुए महान॥5॥

दोहा–राही बनते मोक्ष के, तीर्थंकर भगवान।
जिनसे दर्शन ज्ञान पा, करते निज कल्याण॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–आदिम तीर्थंकर बने, आदिनाथ भगवान।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, पाने शिव सोपान॥

॥अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री आदिनाथ गर्भकल्याणक पूजा-1

स्थापना (चौपाई)

आदिनाथ जी गर्भ में आए, इन्द्रादिक तव हर्ष मनाए।
रत्न वृष्टि पावन करवाए, चरणों में जयकार लगाए॥
श्री जिन के पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।
सुरभित पुष्प हाथ में लाए, आह्वानन करने हम आए॥

दोहा–दूज कृष्ण आषाढ़ को, आदिनाथ भगवान।
इस भव का अन्तिम प्रभू, पाए गर्भ कल्याण॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

इतना नीर पिया है हमने, तीन लोक भर जाए।
तृप्त नहीं हो पाए अब तक, नीर चढ़ाने लाए॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार बहु देह धारकर, त्रिभुवन में भटकाए।
चन्दन लेकर नाथ आज, संताप नशाने आए॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥2॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने हमे सताया, आत्म सौख्य न पाए।
अक्षय पद पाने हेतू हम, अक्षय अक्षत लाए॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥3॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव के वश में होकर, प्राणी यह भटकाए।
कामजयी हो आप अतः हम, पुष्प चढ़ाने लाए॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥4॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर का तम हरने को हम, घृत के दीप जलाए।
मोह महातम हो विनाश अब, पूजा करने आए॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥5॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाने से तो, जग उजियारा होवे।
सम्यक् ज्ञान शिखा ज्योती से, मोह महातम खोवे॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥6॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शान्ती को भूल रहे हम, चतुर्गती भटकाए।
अष्ट कर्म के नाश हेतु यह, धूप जलाने लाए॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥7॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के फल खाकर के, हमने राग बढ़ाया।
चतुर्गती में भ्रमण किया है, मुक्ती फल न पाया॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥8॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों का मिश्रण करके, हमने अर्घ्य बनाया।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य सत् मेरा, निज स्वरूप ना पाया॥
चय करके सर्वार्थ सिद्धि से, गर्भागम प्रभु पाए।
जिन अर्चा करने के हमने, शुभ सौभाग्य जगाए॥9॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– गर्भ कल्याणक पाए जिन, आदिनाथ भगवान।
विशद भाव से अब यहाँ, गाते हम जयगान।

(पद्धरि छन्द)

है धन्य-धन्य माता महान्, जिनवर अवतारे गर्भ आन।
जिन अष्ट देवियाँ शरण आय, हों धन्य मात की भक्ति पाय॥
सब इन्द्र भक्ति करते महान्, करते मिलकर के नृत्य गान।
जिनके गुण का है नहीं पार, जिनकी महिमा जग में अपार॥
जो धर्म रूप की रहे खान, जिनके गुण जग में हैं महान्।
जो शील ज्ञान के रहे कोष, न होते जिनमें कोई दोष॥
जो महाशांति की रहे खान, जय-जय तीर्थंकर मात जान।
जिनमात पाय दर्शन महान, अन्तर में पाया भेद ज्ञान॥
होता यह जानो चमत्कार, करके आहार न हो निहार।
हो वीरवती माता महान्, तन होता है अति कांतिमान॥
माता का तन न क्षीण होय, तन व्याधी को भी पूर्ण खोय।
न मात उदर हो वृद्धिवन्त, हो जाय दोष का पूर्ण अन्त॥

माँ मुक्ती का अधिकार पाय, वह निकट भव्य हो मोक्ष जाय।
यह पूर्व पुण्य का सुफल जान, जो गर्भ प्राप्त कीन्हा महान्।।
सुर-नर करते माँ को प्रणाम, हम वन्दन करते सुबह-शाम।
मन में जागी बश यही चाह, मिल जाय प्रभू की हमें छाँह।
हम को उस पद का मिले योग, मिट जाय जरादिक जन्म रोग।
हम वंदन करते बार-बार, मिल जाए भव का हमें पार।।

(छंद-घत्तानंद)

जय-जय जिन ज्ञाता, जग के त्राता, सर्व जगत् मंगलकारी।
जय धर्म प्रदाता, सुख के दाता, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अर्हन्तों को पूजकर, पाएँ धर्म अनन्त।
गर्भ कल्याणक प्राप्त कर, करें कर्म का अंत।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक पूजा-2

स्थापना

जन्म कल्याणक आदिनाथ जी, चैत्र कृष्ण नौमी को पाय।
नगर अयोध्या के पुर वासी, सुर नर नारी हर्ष मनाय।।
इन्द्रराज बालक को लेकर, मेरू गिरी पे न्हवन कराय।
शिव पथ गामी आदिनाथ का, आह्वानन् कर मन हर्षाय।।
दोहा– भक्त बने हम आपके, करते हैं गुणगान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणप्राप्त श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणप्राप्त श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणप्राप्त श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द

जन्म लिया हमने भव भव में, भव-भव नीर पिया है।
तृप्ति नहीं मिल पाई अतः अब, जल से धार किया है।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के सब भोग किए हैं, उनसे शांति न पाई।
चन्दन चढ़ा रहे हम अब यह, शांती पाने भाई।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आतम वैभव, खण्ड खण्ड कर डाला।
अक्षत से पूजा करते सुख, अक्षय देने वाला।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अपने वश में तीन लोक को, कामदेव कर लीन्हा।
उसके जेता आप अतः यह, पुष्प समर्पण कीन्हा।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।4।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि भोजन करने से, मेरी ना मिट पाई।
यह नैवेद्य चढ़ाते हमको, निजपद की सुधि आई।।

हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर से अंध हुए हम, निज को जान न पाए।
आत्म ज्ञान उद्योत हेतु यह, घृत का दीप जलाए।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।6।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म यह काल अनादी, हमको सता रहे हैं।
धूप जलाते तव चरणों में, दुख ना जात सहे हैं।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।7।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनश्वर फल की चाहत में, देव कई हम पूजे।
मोक्ष महाफल देने वाले, नहीं आप सम दूजे।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।8।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य का, अर्घ्य बनाकर लाए।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आए।।
हर्षित होकर के शतेन्द्र सब, जन्म कल्याण मनाए।
पूजा करने आदिनाथ की, आज यहाँ हम आए।।9।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– आदिनाथ जिनराज जी, पाए जन्म कल्याण।
जयमाला गाते यहाँ, करने निज का ध्यान।।

(वीर छंद)

पूर्व भवों में भव्य भावना, सोलहकारण भाते जीव।
तीर्थंकर के पादमूल में, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।
बंध करें तीर्थंकर प्रकृति, निकट भव्य हो जाते हैं।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाके, श्रेष्ठ मोक्ष पद पाते हैं।।1।।
तीर्थंकर प्रकृति के पहले, किया पुण्य या पाप अतीव।
उसके फल से स्वर्ग नरक में, जाते हैं इस जग के जीव।।
स्वर्ग नरक की आयु पूर्ण हो, उसके भी छह महीने पूर्व।
तीर्थंकर प्रकृति उदय हो, तब घटनाएँ होय अपूर्व।।2।।
देव सुरक्षा कवच बनाकर, उसमें रखते हैं मनहार।
पूर्ण सुरक्षा का होता फिर, देवों को पूरा अधिकार।।
जन्म नगर में रत्न वृष्टि फिर, देव करें शुभ अपरंपार।
वातावरण वहाँ का होता, श्रेष्ठ मनोहर मंगलकार।।3।।
देव कुमारिकाएँ आकर के, गर्भ का शोधन करती हैं।
माता के मन को प्रमुदित कर, शुभ भावों से भरती हैं।।
नौ महीने तक गर्भ में रहता, तीर्थंकर का जीव महान्।
करते देव अर्चना भक्ती, भाव सहित करते सम्मान।।4।।
सभी नरक के जीवों में भी, अनुपम खुशियाँ छा जावें।
जन्म समय पर सर्वलोक में, क्षण भर को सुख पा जावें।।
इन्द्रों के आसन कंपित हों, वाद्य बजें हो घंटा नाद।
नमन् करें आगे बढ़कर सुर, वहीं से पावें आशीर्वाद।।5।।
ऐरावत लेकर आवें फिर, आवे सभी देव परिवार।
हर्षित होकर नाचे गावें, बोले प्रभु की जय-जयकार।।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, न्वहन कराते मंगलकार।
चंदन आदिक से शृंगारित, शची करे फिर बारम्बार।।6।।

मात-पिता परिवार स्वजन सब, हर्षित होते हैं भारी।
जन्म कल्याणक की इस जग में, महिमा होती है न्यारी॥
हम कल्याणक मना रहे हैं, स्व कल्याण मनाने को।
पूजा अर्चा करते भविजन, निज सौभाग्य जगाने को॥7॥

दोहा– अंतिम है यह भावना, हो मेरा कल्याण।
चरण वंदना कर रहे, करने मोक्ष प्रयाण।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भव तारक तव पाद में, झुका रहे हम शीश।
भवदधि तट के पार से, दो हमको आशीष॥

॥इत्याशीर्वाद:॥

श्री आदिनाथ तप कल्याणक पूजा-3

स्थापना

नीलाञ्जना की मृत्यु देखकर, जिनके मन वैराग्य जगा।
भेद ज्ञान प्रगटाए उर में, चेतन में तव चित्त लगा।
चैत कृष्ण नौमी को पाए, आदिनाथ जी तप कल्याण।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते हम प्रभु का आह्वान॥

दोहा– संयम धारा आपने, किया स्व पर कल्याण।
भक्त पुकारें आपको, दो शिव पद का दान॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

निशदिन भोगों को भोगा है, इसमें ही हृदय लुभाया है।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, मन में यह भाव समाया है॥
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन धन परिजन की चाह दाह, मानव मन को संतप्त करे।
चन्दन की शीतलता मन को, श्रद्धा आने पर पूर्ण हरे॥
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्वॉस-श्वॉस में जन्म मरण, करके अगणित दुख पाते हैं।
शुभ अक्षय पद से हीन रहे, भव सिन्धु में गोते खाते हैं॥
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पुलकित होता पुष्पों से, हम काम वासना में अटके।
भँवरे की भाँती भ्रमण किया, भव सागर में दर-दर भटके॥
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है बड़ी लालसा खाने की, खाकर भी तृप्त न हो पाते।
हो क्षुधा रोग का नाश नाथ, हम तव चरणों में सिर नाते॥

तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखता है जो भी आँखों से, उसको प्रकाश हमने माना।
है आत्म ज्ञान का जो प्रकाश, उसको हमने न पहिचाना।।
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आँधी चलने से कर्मों की, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
कर्मों का जाल नशाए जो, वह नर शिव पद को पाता है।।
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फैला कर्मों का जाल यहाँ, उसमें सब फँसते जाते हैं।
सब ज्ञान ध्यान निष्फल होता, न मोक्ष महाफल पाते हैं।।
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ भाव की सरिता में, हम गोते खाते आए हैं।
अब रत्नत्रय की निधि पाने, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
तप करके आदिनाथ स्वामी, मुक्ती पथ को अपनाए हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के गामी, अतएव शरण में आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– कर्म धातिया नाश कर, पाए तप कल्याण।
आदिनाथ भगवान हम, पाएँ ज्ञान निधान।

(शंभु छन्द)

पूर्व भवों में सोलह कारण, भव्य भावना भाते हैं।
तीर्थंकर के पादमूल में, बंध प्रकृति का पाते हैं।।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, पञ्च कल्याणक के धारी।
स्वर्ग-नरक से आने वाले, होते हैं जग उपकारी।।
गर्भ जन्म कल्याणक पावन, नर सुर भव्य मनाते हैं।
जन्मभूमि को अतिशयकारी, आकर खूब सजाते हैं।।
पाकर के युवराज राज्य पद, पाते इन्द्रिय के सुखभोग।
मिलने पर कोई निमित्त वह, धारण करते हैं शुभ योग।।
तप कल्याणक के अवसर पर, बैठ पालकी में जाते।
ब्रह्म ऋषी आकर के तप की, महिमा प्रभु से बतलाते।।
पञ्च महाव्रत आदिक संयम, धारण करते भली प्रकार।
सुर-नर असुर सभी मिलकर के, बोलें प्रभु की जय-जयकार।।
पञ्च समीति तीन गुप्तियाँ, का भी पालन करते देव।
तत्त्वों के चिंतन स्वरूप में, रहते हैं जो लीन सदैव।।
निर्वाणादिक भूतकाल में, चौबीस जिनवर हुए महान्।
ऋषभादिक का वर्तमान में, भाव सहित करते गुणगान।।
महापद्म आदिक भावी जिन, पाते हैं सब तप कल्याण।
विशद ज्ञान को पाने वाले, सिद्ध शिला पर करें प्रयाण।।
तप कल्याणक के अवसर पर, यही भावना भाते नाथ।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, अतः झुकाते चरणों माथ।।
दोहा– तप कल्याणक प्राप्त कर, करें कर्म की हान।
शिव पद पाने के लिए, करते विशद विधान।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आदिनाथ जिनराज जी, पाए तप कल्याण।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, जग में हुए महान्॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री आदिनाथ ज्ञान कल्याणक पूजा-4

स्थापना

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, पाए अतिशय केवल ज्ञान।
सर्व चराचर के ज्ञाता हो, दिव्य देशना दिए महान॥
सुर नर इन्द्र नरेन्द्र मुनीश्वर, बोलें प्रभु की जय-जयकार।
आह्वानन् करते हम प्रभु का, वन्दन करके बारम्बार॥
दोहा– फाल्गुन वदि एकादशी, पाए ज्ञान कल्याण।
तीर्थंकर पद के धनी, जग में हुए महान॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीता छन्द)

निज आत्मा को रत्नत्रय, जल से धुलाने आये हैं।
भव रोग जन्मादिक मिटाने, नीर निर्मल लाए हैं॥
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं॥
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप निज का दूर करने, की लगन मन में लगी।
तव शांत मुद्रा देखकर प्रभु, चेतना की शुधि जगी॥
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं॥
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतपविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग में संसार के, उलझे ना शिवपद पाए हैं।
अब सुपद अक्षय प्राप्त करने, नाथ चरणों आए हैं।
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं॥
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय भोगों में फँसकर, भ्रमर बन भरमाए हैं।
हम काम बाधा नहीं अपनी, नाश प्रभु कर पाए हैं॥
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं॥
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा व्याधी से व्यथित, त्रय काल में होते रहे।
घन घात कर्मों के अनादी, काल से हमने सहे॥
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं॥
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या तिमिर में विद्ध होकर, दोष अनगिनते किए।
अब तिमिर मिथ्या नाश करने, लाये जला करके दिए॥

प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं।।
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्भावनाओं ने जलाए, सुगुण आतम के सभी।
निज गुण स्वयं के स्वयं में है, जान पाए ना कभी।।
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं।।
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल धर्म का अनुपम अपूरव, प्राप्त ना कर पाए हैं।
चैतन्य चिन्तन का सुफल, पाने श्री फल लाए हैं।।
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं।।
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! महिमा आपकी, हम जानकर आये यहाँ।
यह अर्घ्य अर्पित कर रहे हैं, पाने सुपद शाश्वत महाँ।।
प्रभु ध्यान कर निज आत्मा का, ज्ञान केवल पाए हैं।।
शिव मार्ग पाने को शरण में, नाथ! हम भी आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद ज्ञान कल्याण की, महिमा का ना पार।
जयमाला गाते यहाँ, नत हो बारम्बार।।

(चाल-टप्पा)

ज्ञानावरणी नाश हुए प्रभु, त्रिभुवन के स्वामी।
पाकर केवलज्ञान बने हैं, मुक्ती पथगामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी...
केवलज्ञान प्राप्त कर भगवन्, बने मोक्षगामी।। जि.

सम्यग्दर्शन चतुर्गति में, पाते हैं प्राणी।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, कहती जिनवाणी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
निज आतम की शक्ती जग में, जिसने पहिचानी।
सम्यग्दृष्टी देवशास्त्र गुरु, के हो श्रद्धानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
सम्यग्दर्शन पाने वाले, हों सम्यग्ज्ञानी।
द्रव्य भाव श्रुत के ज्ञाता फिर, बनते निजध्यानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
अनुक्रम से बन जाते हैं फिर, चारित्र के स्वामी।
रत्नत्रय को पाने वाले, मुक्ती पथगामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
क्षपक श्रेण्यारोहण करके, बनते निज ध्यानी।
ज्ञानावरणी कर्म नाश वह, हों केवलज्ञानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
अनंत चतुष्टय पाने वाले, इस जग के स्वामी।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाले, हों त्रिभुवन नामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
ज्ञानकल्याणक की महिमा को, कहे कौन ज्ञानी।
त्रिभुवनपति के द्वारे आकर, झुकते सब मानी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...
ज्ञान 'विशद' हम पाने आये, हे जिनवर स्वामी।
विनती मम स्वीकार करो अब, हे शिवपुर गामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी!...

दोहा– ज्ञान कल्याणक की रही, महिमा अपरम्पार।
केवलज्ञानी जीव इस, जग से होते पार।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणक सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अंतिम है यह भावना, विशद पाऊँ मैं ज्ञान।
भवसागर से शीघ्र ही, हो मेरा कल्याण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ मोक्ष कल्याणक पूजा-5

स्थापना

आत्म ध्यान कर आदिनाथ जी, कीन्हे सारे कर्म विनाश।
अष्टापद से मुक्ती पाए, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।।
गुणानन्त को पानेवाले, पाए प्रभू मोक्ष कल्याण।
परम सिद्ध पद पाने को हम, करते निज उर में आह्वान।।

दोहा– माघ कृष्ण की चतुर्दशी, पाए मोक्ष निधान।
कर्म नाश कर आदि जिन, बने सिद्ध भगवान।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम जन्म जरा।।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतम हर मनहार, अनुपम है न्यारा।।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतपविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षय पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए।।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति-भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हो कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मती हरे।।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए॥
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए॥7॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल से रसदार, अनुपम थाल भरे।
तुम मुक्ती फल दातार, भव से मुक्त वरे॥
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए॥8॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, कर में यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए॥
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण, शिव पदवी पाए।
हम पूजा करके नाथ, मन में हर्षाए॥9॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– कर्म नाशकर आदि जिन, पाए मोक्ष कल्याण।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(बेसरी छंद)

काल अनादी यह कहलाया, इसका अंत कहीं न पाया।
जीव अनंतानंत कहे हैं, भवसागर में दुःख सहे हैं॥
जन्म-मरण पाते दुखदायी, राग-द्वेष के कारण भाई।
कर्म बंध होता है भारी, जिससे है संसार दुखारी॥
भव्याभव्य कहे हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
भव्य मोक्ष की शक्ती पाते, इतर सदा संसार भ्रमाते॥

सम्यक् श्रद्धा जिनके जागे, मोक्षमार्ग में वो ही लागे।
मोक्षमार्ग रत्नत्रय जानो, वीतरागता भी पहिचानो॥
जो हैं वीतरागता धारी, वे हो जाते हैं अविकारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, जिससे कर्म निर्जरा पाते॥
सर्व कर्म नशते ही प्राणी, पा लेते हैं मुक्ती रानी।
इन्द्र सभी मिलकर के आते, मोक्षकल्याणक वहाँ मनाते॥
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, अपना कोष पुण्य से भरते।
भक्ती करते विस्मयकारी, सर्व जगत् में मंगलकारी॥
अग्नि कुमार देव भी आते, भक्ती से नख केश जलाते।
जयकारा करते हैं भारी, प्रभु होते हैं अतिशयकारी॥
हम भी यही भावना भाते, जिन चरणों में शीश झुकाते।
मुक्ति वधू को हम पा जाएँ, भवसागर में नहीं भ्रमाएँ॥

दोहा– भाते हैं यह भावना, हे शिवपुर के नाथ।
मोक्ष प्राप्त हम भी करें, कभी न छूटे साथ॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकसहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– श्रेष्ठ मोक्ष कल्याण, वीतरागता से मिले।
जिन का यही विधान, और कोई विधि है नहीं॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

जाप : ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष पंचकल्याणक विभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– ऋषभ देव जी पाए हैं, पावन पञ्च कल्याण।
पञ्चम गति पाने विशद, करते हम जयगान॥

(चौबोला छंद)

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के, चरणों में शत् शत् वन्दन।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तव पद में करते अर्चन॥

अन्तिम कुलकर नाभिराय अरु, मरु देवी के हो नन्दन।
देवों ने स्वर्गों से आकर, किया चरण में अभिनन्दन॥1॥
राज्य अवस्था में ही तुमने, जीवों का उपकार किया।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का शुभ उपदेश दिया॥
लौकिक ज्ञान कला सिखलाकर, सुखी किया सबका जीवन।
ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों ने, भी किया ज्ञान अर्जन॥2॥
राज्य सम्पदा वैभव पाकर, नीर कमल वत् रहते थे।
किन्तू स्वजन और परिजन सब, तुमको अपना कहते थे॥
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, आप जन्म से कहलाए।
पावन क्षायिक सम्यक् दर्शन, प्रभु जी अनुपम प्रगटाए॥3॥
नील परी की मृत्यू लखकर, जिनके मन जागा वैराग्य।
बने मोक्ष पथ के वह राही, स्वयं जगाये अपना भाग्य॥
राज्य सम्पदा त्याग किए फिर, परिग्रह प्रभु त्यागे चौबीस।
केश लुंचकर दीक्षा धारे, महाव्रती बन गये ऋशीष॥4॥
गिरि अब्रह्म तोड़ के स्वामी, आत्म ब्रह्म में हुए थे लीन।
एक वर्ष तप करके प्रभु जी, किए कर्म अपने बहु क्षीण॥
कर्म घातिया नाश किए फिर, स्व पर प्रकाशी पाए ज्ञान।
दे उपदेश भव्य जीवों को, किए जगत का भी कल्याण॥5॥
रत्नत्रय ही मोक्ष मार्ग है, सब जीवों को बतलाया।
भूले भटके अज्ञ जनों को, शिव का मारग दर्शाया॥
गिरि कैलाश शिखर अष्टापद, पर प्रभु शुक्ल ध्यान किए।
अन्तिम योग रोधकर स्वामी, महामोक्ष निर्वाण लिए॥6॥
दर्श आपका करके स्वामी, हृदय जगा मेरे श्रद्धान।
पञ्चकल्याणक की पूजा कर, प्राप्त करें हम भी कल्याण॥
प्रभु आपके गुण गाने को, आज यहाँ पर आये हैं।
बनें मोक्षपथ के राही हम, विशद भावना भाए हैं॥7॥

दोहा– भिन्न आत्मा देह से, दिए आप सद्ज्ञान।
विशद भावना है यही, करें आत्म कल्याण॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक विभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूजा कर जिनराज की, भ्रम का होय विनाश।
भेद ज्ञान से जीव का, होवे आत्म प्रकाश॥

॥इत्याशीर्वाद॥

आरती श्री आदिनाथ जी

ॐ जय आदिनाथ स्वामी, प्रभु आदिनाथ स्वामी।
कर्म विजेता जिनवर, बने मोक्षगामी। ॐ जय...

1. नगर अयोध्या जन्मे, जन-जन हर्षाया, स्वामी...-2
   रत्नवृष्टि करके देवों ने, जयकारा गाया। ॐ जय...
2. नाभिराय घर जन्में, मरुदेवी माता, स्वामी...-2
   धर्म प्रवर्तन कीन्हे, इस जग के त्राता। ॐ जय...
3. षट्कर्मों का तुमने, शुभ उपदेश दिया, स्वामी...-2
   भवि जीवों का तुमने, प्रभुकल्याण किया। ॐ जय...
4. प्रथम तीर्थंकर बनकर शिवपथ दर्शाया, स्वामी...-2
   ज्ञान अंकवर्णों का, तुमसे ही पाया। ॐ जय...
5. अष्टापद पर जाके, तुमने ध्यान किया, स्वामी...-2
   कर्म नाशकर अपने, पद निर्वाण लिया। ॐ जय...
6. जो भी द्वार आपके, आरति शुभ गाते, स्वामी...-2
   सभी अमंगल तजके, सुख सम्पत्ति पाते। ॐ जय...
7. 'विशद' आरती करने, चरणों हम आये, स्वामी...-2
   शिव सुख दो हे स्वामी, तव पद में आये। ॐ जय...

प्रशस्ति

¬ue%fl)sH;%Jhewyla?ksdqUndqUnkEuk;scykRdkjx.kslsuxPNsUrh la?kL;ijEijk;kaJhvkfnlkxjkpk;ZtkrkLrr~f'k";%Jhegkohjdhfrz vkpk;ZtkrkLrr~f'k";k%Jhfoeylkxjkpk;kZtkrkLrrf'k";Jh Hkjrlkxjkpk;ZJhfojkxlkxjkpk;kZtkrkLrr~f'k";vkpk;Z fo'knlkxjkpk;ZtEcw}hisHkjr{ks=ksvk;Z[k.MsHkkjrns'ksgfj;k.kizkUrs ukjukSy]ukeuxjsfLFkr1008Jh'kkafrukFkfnxEcjtSuvfr'k;{ks=k eè;svoljsfudkZ.klEor~2540fo-la-2071pSrekls'kqDyki{ksrsjl jfookjckljsJhvkfrukFkiapdY;k.kdfoèkkujpuklekfIrbfr'kqHka HkwkrA

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।

सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥
विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें।